इकाई 6 समाजशास्त्र का अर्थशास्त्र से संबंध*

संरचना

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 समाजशास्त्र का अर्थशास्त्र से संबंध

- 6.2.1 समाजशास्त्र की परिभाषा
- 6.2.2 अर्थशास्त्र की परिभाषा
- 6.2.3 समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र में समानता
- 6.2.4 समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र में अंतर
- 6.2.5 विभिन्न अर्थशास्त्रियों की परिभाषाएं तथा उनका समाजशास्त्र से संबंध
- 6.2.6 विभिन्न समाजशास्त्रियों की परिभाषाएं तथा उनका अर्थशास्त्र से सम्बन्ध

6.3 आर्थिक समाजशास्त्रः समाजशास्त्र की एक उपशाखा

- 6.3.1 आर्थिक समाजशास्त्र का इतिहास
- 6.3.2 समकालीन आर्थिक समाजशास्त्र
- 6.3.3 नए आर्थिक समाज शास्त्र का उद्‌गम

6.4 समाजशास्त्र तथा अर्थशास्त्र की सामान्य समस्याएं

- 6.4.1 बेरोजगारी
- 6.4.2 बालश्रम
- 6.4.3 असमानता
  - 6.4.3.1 आर्थिक असमानता
  - 6.4.3.2 सामाजिक असमानता

6.5 सारांश

6.6 संदर्भ

6.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप पढ़ेंगे :

- समाजशास्त्र का उदगम और विकास;
- समाजशास्त्रःविस्तृत वर्णन;
- समाजशास्त्र तथा अर्थशास्त्र का परस्पर संबंध; तथा
- समाजशास्त्र तथा अर्थशास्त्र संबंधी सामान्य समस्याओं का विश्लेषण।

6.1 प्रस्तावना

इस इकाई में समाजशास्त्र तथा उसके अर्थशास्त्र से संबंध का वर्णन किया गया है। सामाजिक हालात किसी काल विशेष के विचारों तथा उसकी गतिविधियों को पूरी तरह प्रभावित करते हैं। समाज के तर्कसंगत विकास का अध्ययन करने के लिए उस कालावधि में यूरोप में घटी घटनाओं, फ्रांसीसी क्रांति, 17-18वीं शताब्दी की औद्योगिक क्रांति को

*अहमेदुल कबीर, केंद्रीय विश्वविद्यालय, दक्षिण बिहार, गया

समझना जरूरी है। इसे उस काल का नवजागरण भी कहा जाता है क्योंकि इस काल में विज्ञान व सकारात्मक दर्शन का उद्‌भव हुआद्य सामाजिक विचार, सामाजिक दर्शन तथा सामाजिक सिद्धांत विभिन्न काल खंडों की सामाजिक अवधारणाओं व गतिविधियों से प्रभाव ग्रहण करते हैं। समाजशास्त्र सामाजिक विज्ञानों की एक विशेष शाखा है। यह अन्य सामाजिक विज्ञानों से अनेक मामलो में अलग हैं।

समाजशास्त्र की प्रमुख विशेषताएं–

अ) समाजशास्त्र एक स्वतंत्र विज्ञान हैः समाजशास्त्र अब पूर्ण रूप से एक स्वतंत्र सामाजिक विज्ञान विषय बन चुका है। अब इसे इतिहास, राजनैतिक विज्ञान अथवा दर्शनशास्त्र की तरह ही किसी सामाजिक विज्ञान की शाखा के रूप में नहीं जाना जाता है। एक स्वतंत्र सामाजिक विज्ञान के रूप में समाजशास्त्र का अपना अध्ययन क्षेत्र, सीमा तथा विधि विकसित हुई है।

ब) समाजशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है, वह कोई भौतिक विज्ञान नहीं हैः वह भौतिकी, रसायन विज्ञान या जीव विज्ञान से बिलकुल अलग एक स्वतंत्र सामाजिक विज्ञानं है। इसके अंतर्गत मनुष्य, उसका सामाजिक व्यव्हार, सामाजिक क्रिया-कलाप तथा पूरा सामाजिक जीवन आता है। संक्षेप में यह कहा जा सकता हैं कि–

1) समाजशास्त्र सामाजिक दर्शन से उत्पन्न होकर स्वतंत्र व समग्र रूप से विकसित हुआ है।

2) समाजशास्त्र का विकास सामाजिक दर्शन से उस दौर में हुआ जब यह महसूस किया गया कि समाज एक रचनात्मक संस्थान है और उसमें भी बदलाव आते हैं जैसा कि फ्रांसीसी तथा अमेरिकी क्रांति के दौरान हुआ।

6.2 समाजशास्त्र का अर्थशास्त्र से संबंध

6.2.1 समाजशास्त्र की परिभाषा

समाजशास्त्र सामाजिक संबंधों को आधार मानकर चलता है तथा सामाजिक संबंधों व व्यवहारों की व्यवस्थित पद्धतियों के मर्म के विश्लेषण का प्रयास करता है। ऐसा कह सकते हैं कि यह मुख्य रूप से तीन आधारभूत प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करता है। पहला, समाज कैसे और क्यों विकसित हुए? दूसरा, क्यों और किस प्रकार समाज अस्तित्व में रहते हैं? तीसरा, समाज किस प्रकार परिवर्तित होते हैं?

प्रायः सभी समाजशास्त्री इन तथ्यों से सहमत हैं–

अ) समाजशास्त्र का सरोकार मुख्य रूप से मनुष्यों के सामाजिक व्यवहार तथा उनके पारस्परिक संबंधों के विश्लेषण से है।

ब) समाजशास्त्र मौलिक सामाजिक संस्थानों जैसे परिवार तथा सामाजिक व्यवस्था के अध्ययन पर जोर देता है।

स) समाजशास्त्र सामाजिक विकास, सामाजिक बदलाव तथा सामाजिक क्रियाकलापों पर ज़ोर देता हैं।

द) समाजशास्त्र सहयोग एवं प्रतिस्पर्धा, सौजन्य एवं समीकरण, सामाजिक टकराव एवं सामाजिक संपर्क, सामाजिक विभिन्नताओं व सामाजिक समरसताओं आदि सामाजिक प्रक्रियाओं की व्याख्या करता है।

समाजशास्त्र की अपनी स्वतंत्र कार्यप्रणाली होती है जो अनुभव जन्य आंकड़ों तथा अनुमानित तर्कों के आधार पर कार्य करती है। परंतु समान्यीकरण के स्तर पर विशिष्ट नियमों का पालन भी करती है।

समाजशास्त्र

समाजशास्त्र एक महत्वपूर्ण सामाजिक विज्ञान है क्योंकि यह लोगों के जीवन से सीधा सरोकार रखता है। सभी मनुष्य सामाजिक प्राणी हैं– सामाजिक संबंधों के बिना न बच्चों का ठीक से विकास हो पाता, न वयस्कों को दिशा मिल पाती। मानव अस्तित्व के लिए समाज का होना जरूरी है। इस प्रकार समाजशास्त्र समाज का सामान्य विज्ञान है।

6.2.2 अर्थशास्त्र की परिभाषा

अर्थशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है जो आवश्यकताओं तथा उनकी पूर्ति से सरोकार रखता है। अर्थशास्त्रियों का मानना है कि मनुष्य की आवश्यकताएँ एवं इच्छाएं असीमित होती हैं और उनकी पूर्ति के लिए उपलब्ध संसाधन सीमित होते हैं। यही कारण है कि लोग संसाधन इकट्ठे करने तथा धन कमाने में लगे रहते हैं जिससे वे अधिक से अधिक आवश्यकताएं व इच्छाएं पूरी कर सकें। किसान खेतों में, मजदूर कारखानों में, कर्मचारी कार्यालयों में तथा शिक्षक विद्यालयों में इसीलिए काम करते हैं कि वे धन अर्जित कर सकें।

विभिन्न कार्यों में लोग क्यों व्यस्त रहते हैं? इस प्रश्न का एक ही उत्तर है कि वे अपने-अपने कार्यों के बदले धन अर्जित करते हैं जिससे वे अपने जीवन में अधिक से अधिक आवश्यकताओं एवं इच्छाओं की पूर्ति कर सकें। आवश्यकताएं अनेक प्रकार की होती हैं। इन में आवश्यक आवश्यकताएं हैं - रोटी, कपड़ा और मकान तथा अन्य अनेक आवश्यकताएं जैसे बेहतर शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं आदि। सभी इच्छाओं की तथा आवश्यकताओं की पूर्ति इसलिए भी संभव नहीं क्योंकि ज्यों ही मनुष्य एक इच्छा पूरी करता है त्यों ही दूसरी इच्छा जन्म ले लेती है। इस सिलसिले का कोई अंत नहीं। कच्चे माल को उपयोग में आने वाली वस्तुओं में बदलने की प्रक्रिया अर्थशास्त्र के अंतर्गत आती है। इन वस्तुओं को उत्पाद कहा जाता है। वस्तुओं के इस्तेमाल को अर्थशास्त्र की भाषा में उपभोग एवं वितरण कहा जाताहै।

अर्थशास्त्र

अर्थशास्त्र उपभोग, उत्पादन एवं धन वितरण का अध्ययन है।

समाजशास्त्र सामाजिक विज्ञान है और वह मनुष्यों से जुड़े तमाम संस्थानों व सरोकारों से सीधा संबंध रखता है। समाजशास्त्र मानवीय व्यवहारों, उनकी सामाजिक परिस्थितियों तथा दशाओं का वैज्ञानिक अध्ययन है। मनुष्य के समस्त आर्थिक क्रियाकलापों से अर्थशास्त्र का सीधा संबंध है। अर्थशास्त्र मूलतः धन एवं उससे जुड़े सरोकारों का अध्ययन है। प्रोफेसर रॉबिंस के अनुसार अर्थशास्त्र सामाजिक विज्ञान है, जो मनुष्य की असीमित इच्छाओं तथा सीमित संसाधनों से उपजे हालातों एवं मानवीय व्यवहारों का अध्ययन करता है। यह मनुष्य की उत्पादन, उपभोग, वितरण तथा आदान प्रदान से जुड़ी समस्त गतिविधियों पर विशेष ध्यान देता हैं। विभिन्न आर्थिक संगठनों जैसे बैंकों व बाज़ारों आदि के स्वरूप एवं कार्य प्रणालियाँ भी अर्थशास्त्र के अंतर्गत आते हैं। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि अर्थशास्त्र मनुष्यों की भौतिक आवश्यकताओं तथा उसके हितों से सीधा संबंध रखता है।

समाजशास्त्र तथा अर्थशास्त्र दोनों ही सामाजिक विज्ञान हैं और इनका एक दूसरे से गहरा संबंध है। दोनों एक दूसरे से संबंधित भी हैं और एक दूसरे पर निर्भर भी हैं। समाजशास्त्र

तथा अर्थशास्त्र के संबंध के संदर्भ में थॉमस का विचार है कि, अर्थशास्त्र समाजशास्त्र की एक शाखा है। सिल्वर मैन के अनुसार अर्थशास्त्र समाजशास्त्र से ही जन्मा है जो सभी सामाजिक संबंधों के सामान्य सिद्धांतों का अध्ययन करता है।

अर्थशास्त्र मनुष्य के लिए हितों को साधने वाले समस्त भौतिक संसाधनों का अध्ययन करता है। मानवीय हितों को साधने के लिए अर्थशास्त्र मनुष्य के हितों से जुड़े सभी विज्ञानों विशेष रूप से समाज विज्ञान से सहयोग लेता है। इस प्रकार अर्थशास्त्र समाजशास्त्र पर आधारित है। अर्थशास्त्र, क्योंकि समाजशास्त्र का ही हिस्सा है अतः समाजशास्त्र की सहायता के बिना अर्थशास्त्र को नहीं समझा जा सकता। मनुष्य के आर्थिक तथा सामाजिक हित एक दूसरे से सीधे जुड़ें हैं।

जब समाज के सामने आर्थिक मंदी, गरीबी, बेरोजगारी, अदि समस्याएं आती हैं तब उनका हल निकालने के लिए अर्थशास्त्री समाजशास्त्र की ही सहायता लेते हैं और पता लगाते हैं कि उस काल विशेष में कौन-कौन सी सामाजिक घटनाएं घटी। यह भी सच है कि व्यक्ति की आर्थिक गतिविधियों को समाज ही नियंत्रित करता है। सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री मैक्स वेबर, विल्फ्रेडो परेटो आदि ने वित्तीय मामलों व सामाजिक सरोकारों पर विशेष अनुसंधान किए हैं जो अर्थशास्त्र के लिए बड़े उपयोगी साबित हुए हैं। कुछ अर्थशास्त्री तो यहां तक मानते हैं कि जब समाज बदलता है तो उसके साथ-साथ अर्थशास्त्र भी बदल जाता है। हर आर्थिक समस्या का समाधान प्रायः समाजशास्त्र से प्राप्त आंकड़ों से ही संभव हो पाता है। स्पष्ट है कि समाजशास्त्र से दूरी बना लेने से अर्थशास्त्र का विकास नहीं हो सकता। इसी प्रकार समाजशास्त्र भी अर्थशास्त्र के सहयोग पर निर्भर करता है।

अर्थशास्त्र से सामाजिक ज्ञान में वृद्धि होती है। सामाजिक जीवन के हर पहलू को कहीं ना कहीं आर्थिक सरोकार प्रभावित करते हैं। दहेज, आत्महत्या आदि सामाजिक समस्याएं प्रायः आर्थिक सरोकारों से ही जुड़ी होती हैं। आर्थिक तंगी ही अक्सर इन की जड़ों में पाई जाती है। इस प्रकार अर्थशास्त्र समाजशास्त्र का ही एक भाग है और अर्थशास्त्र के सहयोग के बिना समाजशास्त्री अधिकतर सामाजिक समस्याओं का समाधान नहीं तलाश सकते। सामाजिक विज्ञान एवं अनुसंधान के क्षेत्र में भी अर्थशास्त्र समाजशास्त्र की सहायता करता है। सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री कार्ल मार्क्स मानता है कि समाज की स्थापना आर्थिक संबंधों से ही हुई है। हमारे सामाजिक जीवन में आर्थिक सरोकारों की भूमिका सबसे बड़ी होती है। आर्थिक संस्थानों से समाज शास्त्रियों का सीधा सरोकार रहता है। यही कारण है कि स्पेंसर, वेबर, दुर्खेइम आदि समाजशास्त्री यह मानते हैं कि अर्थशास्त्र से सहयोग लिए बिना मनुष्य के सामाजिक संबंधों का विश्लेषण नहीं किया जा सकता।

यह सच्चाई कि समाज पर आर्थिक सरोकारों का बड़ा प्रभाव पड़ता है तथा आर्थिक नीतियां एवं योजनाएं समाज की स्थितियों के आधार पर बनाई जाती हैं, साफ़ साफ़ बताती हैं कि समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र के बीच गहरा संबंध है। अर्थशास्त्र को मनुष्य जीवन के उद्यमों में व्यवसायों का अध्ययन कहा जा सकता है। दूसरे शब्दों में कहें तो अर्थशास्त्र वित्त एवं संसाधनों का विज्ञान है जिसकी तीन प्रमुख आयाम है- उत्पादन, वितरण तथा उपभोग।

समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र के बीच सहयोग का क्षेत्र बहुत व्यापक है। आर्थिक समस्याओं का अध्ययन करते समय अर्थशास्त्री समाज शास्त्रियों का साथ जरूरी मानते हैं। जब दोनों मिलकर काम करते हैं तो आर्थिक चुनौतियों का सामना करने में आसानी हो जाती है।

उपर्युक्त विवरण से भलीभांति स्पष्ट हो चुका है कि समाजशास्त्र व अर्थशास्त्र एक दूसरे से सीधे जुड़े हैं। सामाजिक व आर्थिक समस्याओं का सटीक हल समाजशास्त्री व अर्थशास्त्री

मिलकर ही निकाल सकते हैं। आर्थिक परिवर्तनों से सामाजिक बदलाव आते हैं तथा सामाजिक परिवर्तन होने पर आर्थिक परिवर्तन भी तदानुसार करने ही पड़ते हैं।

6.2.3 समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र में अंतर

एक दूसरे से इतनी गहराई से संबंधित होने तथा एक दूसरे पर इतने निर्भर होने के बावजूद इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि दोनों के बीच कुछ अंतर हैं जिनका विवरण नीचे दिया जा रहा है-

1) समाजशास्त्र समाज तथा सामाजिक संबंधों का अध्ययन करता है जबकि अर्थशास्त्र धन तथा उससे मिलने वाली सुविधाओं का अध्ययन करता है।

2) समाजशास्त्र का विकास समाज से उसके एक विज्ञान के रूप में हुआ है जबकि अर्थशास्त्र पहले से ही समाज के विज्ञान के रूप में मौजूद रहा है।

3) समाजशास्त्र अनुमान आधारित विज्ञान है जबकि अर्थशास्त्र आंकड़ों के आधार पर चलने वाला एक ठोस विज्ञान है जिसका सामाजिक विज्ञानों के बीच अपना महत्वपूर्ण स्थान है।

4) समाजशास्त्र प्रायः सामाजिक विज्ञान के सभी पहलुओं से संबंध रखता है जबकि अर्थशास्त्र सामाजिक विज्ञान के आर्थिक पक्ष को लेकर चलता है।

5) समाजशास्त्र का क्षेत्र व्यापक एवं विस्तृत है जबकि अर्थशास्त्र का क्षेत्र सीमित है।

6) समाजशास्त्र मनुष्यों की सामाजिक गतिविधियों से सरोकार रखता हैजबकि अर्थशास्त्र मनुष्यों की केवल आर्थिक गतिविधियों से सरोकार रखता है।

7) समाज शास्त्र के अध्ययन में समाज को इकाई माना जाता हैं जबकि अर्थशास्त्र के अध्ययन में व्यक्ति को इकाई माना जाता है।

8) समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र के अध्ययन की विधियां तथा तकनीक अलग-अलग हैं।

6.2.4 विभिन्न अर्थशास्त्रियों की परिभाषाएं तथा उनका समाजशास्त्र से संबंध

सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री ए सी पिगौ के अनुसार अर्थशास्त्र सामाजिक हित के केवल उस पक्ष का अध्ययन करता है जो प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से धन से संबंधित होता है। इस परिभाषा में अर्थशास्त्री ने पूरे समाज को ही आधार बनाया है। व्यक्तियों की आवश्यकताओं व सरोकारों को नहीं। यहां वह यह कहना चाहता है कि सामाजिक संबंध धन के कारण बनते हैं जोकि अर्थशास्त्र का क्षेत्र है। यदि हम सामाजिक संबंधों पर नजर डालें तो स्पष्ट दिखाई पड़ता है कि धनवान प्रायः धनवानों के साथ संबंध बनाते हैं और उनके साथ ही अधिक समय बिताना पसंद करते हैं। गरीबों के लिए वहां कोई जगह नहीं होती। इसके अलावा अमीर लोग गरीबों की तुलना में अपने आप को उच्च मानते हैं क्योंकि उनके पास अधिक धन होता है जिससे वे बहुत से संसाधन इकट्ठे कर सकते हैं। जबकि गरीबों के पास धन नहीं होता। अमीरों के संपर्क में आते समय गरीब झिझकते हैं क्योंकि कम संसाधन होने के कारण उनके अंदर हीनता की भावना होती हैं। इससे स्पष्ट है कि सामाजिक संबंधों के निर्माण में समाज में धन की विशेष भूमिका होती है।

अर्थशास्त्री जॉन स्टूअर्ट मिल (1844) सामाजिक संदर्भ में अर्थशास्त्र के दखल पर जोर देते हुए कहता है कि,"अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो समाज के उन कार्यों के बारे में नियमों का निर्धारण करता है जो धन एवं उत्पादन से संबंधित है।" उक्त परिभाषा में स्पष्टतः आर्थिक

क्रियाओं पर समाज के प्रभावों को रेखांकित किया गया है। हर समाज में ऐसे प्राकृतिक नियम पहले से ही मौजूद रहते हैं जो आर्थिक लाभ के लिए आधार तैयार करते हैं।

सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री अलफ्रेड मार्शल के अनुसार मानव जीवन के उद्यमों के क्षेत्र का अध्ययन अर्थशास्त्र के अंतर्गत आता है। अर्थशास्त्र उन वैयक्तिक एवं सामाजिक गतिविधियों का अध्ययन करता है जो आवश्यकताओं की पूर्ति तथा हितों के संरक्षण से संबंधित हैं। इससे पता लगता है कि अर्थशास्त्र के अध्ययन के केंद्र में मनुष्य तथा उसकी सामाजिक गतिविधियां हैं। एक तरफ वह मनुष्यों का अध्ययन करता है तथा दूसरी ओर आर्थिक गतिविधियों से संबंधित आर्थिक क्रियाओं के सामाजिक प्रबंधन की बात कहता है। ऐसा कहकर उसने वैयक्तिकता व सामाजिकता के बीच सम्बन्ध स्थापित किया है। अथवा यह कह सकते है कि सामाजिक सन्दर्भ में व्यक्तियों के आर्थिक प्रयासों पर अधिक ज़ोर दिया है। जैसे एक चर्च केवल उन पत्थरों का समुच्य मात्र नहीं है जिनसे वह बनी है। जैसे एक व्यक्ति भावनाओं और विचारों के अलावा भी बहुत कुछ होता है वैसे ही समाज का जीवन उसमें रहने वाले सभी लोगों की जिंदगियों का जोड़ मात्र नहीं है।

सच्चाई यह है कि पूरे समाज के कार्य उसमें रहने वाले लोगों के कार्य ही होते हैं। यही कारण है कि किसी समाज की आर्थिक समस्याएं उसमें रहने वाले लोगों की ही होती हैं। समाज के लोगों के किसी न किसी व्यापार अथवा औद्योगिक संस्थान से जुड़े होने के कारण उनकी व्यक्तिगत आर्थिक समस्याएं भी आर्थिक नीतियों एवं कार्यक्रमों का हिस्सा बन जाती हैं। पूरे समाज के हितों को केंद्र में रखते हुए अल्फ्रेड मार्शल यह मानकर चलता है कि समाज के सदस्य प्रथक तथा प्रतिस्पर्धी व्यक्ति मात्र नहीं है, उन्हें आपस में संपर्क में रहते हुए ऐसी आर्थिक नीतियों का निर्माण करना चाहिए जिनके कारण व्यक्तियों के हितों में टकराव की स्थिति उत्पन्न न हो।

प्रमुख ब्रिटिश अर्थशास्त्री सर जेम्स स्टुअर्ट (1767) राजनैतिक अर्थव्यवस्था शब्द का इस्तेमाल करते हुए कहते हैं - जैसे परिवार की अर्थव्यवस्था सामान्यतः परिवार के सभी सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है, उसी प्रकार किसी देश की राजनैतिक अर्थव्यवस्था आर्थिक मदद के लिए इस तरह कदम उठाती है कि समाज में रहने वाले सभी लोगों की आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके, लोगों को योग्यतानुसार समुचित रोजगार मिल सके, उनके बीच आपसी समझ व सहयोग के संबंध इस प्रकार विकसित होते रहे कि वे एक दूसरे की रुचियों व आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए परस्पर सहयोग करते रहें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने समाज के विभिन्न घटकों- परिवार, नागरिक, सामाजिक संपर्क, आदान प्रदान अदि का उल्लेख किया है जो निश्चित रूप से समाज के विषय हैं। इस प्रकार उनके अनुसार ये साबित हो जाता है कि अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र एक दूसरे से सीधे जुड़े हैं।

6.2.5 विभिन्न समाजशास्त्रियों की परिभाषाएं तथा उनका अर्थशास्त्र से संबंध

सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री मैक्स वेबर के अनुसार "समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो सामाजिक क्रियाओं की पूरी समझ रखता है ताकि वह उनके कारणों और परिणामों की संक्षिप्त व्याख्या कर सकें।" समाजशास्त्र द्वारा अपनाया जाने वाला कारण व प्रभाव का सिद्धांत अर्थशास्त्र से संबंधित है। इसके आधार पर विभिन्न आर्थिक नीतियों का प्रादुर्भाव होता है। फ्रांसीसी क्रांति का उल्लेख करते हुए मैक्स वेबर कहता है कि, फ्रांस की क्रांति वहां के आम लोगों को दी गयी यातनाओं तथा उन पर होने वाले अन्याय का परिणाम थी। जब फ्रांस के लोग बड़ी संख्या में गरीबी और बेबसी का शिकार होने लगे और उनकी समझ में आ गया कि

उन्हीं के समाज के कुछ लोग सत्ताधीशों से ताकत पाकर उन्हें नरकीय जीवन जीने पर विवश कर रहे है तो उन्होंने मिलकर सत्ता के खिलाफ बगावत कर दी और क्रांति का जन्म हुआ। स्पष्ट है कि फ्रांसीसी क्रांति के पीछे आर्थिक व सामाजिक कारण थे क्योंकि अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र एक दूसरे से संबंधित हैं तथा एक में घटित होने वाला कारण दूसरे को प्रभावित करता है और यदि दोनों एक साथ मिल जाए तो प्रभाव परिवर्तनकारी होता है। अनेकानेक आर्थिक कारण समाज पर अपना प्रभाव डालते हैं और उसके परिणाम आते हैं।

मॉरिस जींस बर्ग के अनुसार, "समाजशास्त्र व्यापक रूप से समाज में रहने वाले लोगों के परस्पर व्यवहारों तथा संबंधों, उनकी दशाओं एवं परिणामों का अध्ययन है।" अनेक सामाजिक एवं व्यक्तिगत घटक मनुष्य के आपसी संपर्क और व्यवहार को नियंत्रित करते हैं। इनमें भावनाएं, व्याहारिक गतिविधियां एवं आर्थिक कारण विशेष रूप से भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए माता-पिता अपने बच्चों की अधिक से अधिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं, कम से कम तब तक जब तक कि वे स्वयं अपना जीवन चलाने के लिए धन अर्जित करने के काबिल नहीं हो जाते। परिवार व सामाजिक संस्थान भी बच्चों के लिए उपयोग की समस्त वस्तुएं उपलब्ध करवाते हैं तथा उन्हें समुचित सेवाएं प्रदान करते हैं। पति अपनी पत्नी की सभी प्रकार की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। उसका यह कार्य पारिवारिक एवं सामाजिक व्यवहार के अंतर्गत आता है। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि मनुष्यों के सामाजिक व्यवहारों व कार्यों में आर्थिक पक्ष विशेष रूप से सम्मिलित रहता है।

बोध प्रश्न

1) समाजशास्त्र के अर्थशास्त्र से संबंधों की व्याख्या कीजिए?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) उन सामान्य समस्याओं की व्याख्या कीजिए जो अर्थशास्त्र व समाज शास्त्र दोनों के अंतर्गत आती हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र में क्या अंतर है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6.3 आर्थिक समाजशास्त्रः समाजशास्त्र की एक उप शाखा

6.3.1 आर्थिक समाजशास्त्र का इतिहास

आर्थिक समाजशास्त्र की जड़ें प्राचीन दार्शनिक तथा सामाजिक विज्ञान की परंपराओं में देखी जा सकती हैं जबकि समाज विज्ञान की सुनियोजित व सुव्यवस्थित उपशाखा के रूप में आर्थिक समाजशास्त्र का इतिहास एक शताब्दी से अधिक पुराना नहीं है। अपने स्रोत से निकलने तथा विकसित होने के बाद आर्थिक समाजशास्त्र ने आर्थिक मामलों में समाज का विश्लेषण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सुप्रसिद्ध विद्वान कार्ल मार्क्स के लेखों में आर्थिक समाजशास्त्र के अभ्युदय की झलक मिलती है।स्मेल्सर, एन, जेव स्वेडबर्ग, आर के अनुसार "आर्थिक समाजशास्त्र" शब्द का प्रयोग 1879 में हुआ। सबसे पहले ब्रिटिश अर्थशास्त्री डब्लू स्टैन लेजेवनॉयस ने 1879 में "आर्थिक समाजशास्त्र" का उल्लेख किया। यहां से समाजशास्त्रियों ने इसे पकड़ा और 1890 तथा 1920 के बीच दुर्खेइम तथा वेबर ने समाजशास्त्र में इसका प्रयोग किया। इन्हीं दशकों में आर्थिक समाजशास्त्र का जन्म हुआ।

1893 में दुर्खेइम ने द डिवीज़न ऑफ़ लेबर इन सोसाइटी में इसका उल्लेख किया हैं तथा सिम्मलने अपनी पुस्तक द फिलॉसोफी ऑफ मनी (1900) में तथा वेबरने अपनी पुस्तक इकोनामी एंड सोसायटी (1908-20) में आर्थिक समाजशास्त्र का उल्लेख किया है। इससे समाज शास्त्र के क्षेत्र में एक नई चेतना जागी, एक नई धारा के अभ्युदय की नींव पड़ी। आरंभ में वेबर तथा उनके अन्य साथियों को ऐसा लगा था कि उन्होंने ही सबसे पहले आर्थिक समाजशास्त्र शब्द का प्रयोग किया है। उन्होंने उसके क्षेत्र पर अपने आप को केंद्रित करते हुए यह स्पष्ट करने का प्रयास किया कि समाज में अर्थव्यवस्था की क्या भूमिका है तथा अर्थव्यवस्था का सामाजिक विश्लेषण अर्थशास्त्र से किस प्रकार भिन्न है? आर्थिक क्रिया क्या है? इसमें यह जोड़ना भी आवश्यक है कि प्राचीन समय में एकत्रित किए गए आंकड़े पूर्वाग्रह से युक्त थे। इसका समाज पर प्रभाव पड़ा और समाज में एक बड़ा परिवर्तन आया।

6.3.2 समकालीन आर्थिक समाजशास्त्र

विशेष रूप से 1980 के बाद आर्थिक समाजशास्त्र ने अपनी उल्लेखनीय पहचान बना ली। कुछ समाजशास्त्री जो बाजार तथा समाज के संबंधों पर घनघोर अनुसंधान कर रहे थे उन्होंने बाजार तथा समाजशास्त्र पर अनेक लेख लिखे। इसका परिणाम यह हुआ कि आर्थिक समाजशास्त्र ने समाजशास्त्र में अब अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया। के 1980 अभियान में मार्क ग्रानोवेटर का विशेष योगदान रहा। मार्क ग्रानोवेटर ने ठोस सामाजिक

संबंधों में आर्थिक क्रियाओं की अंतर्निहितता पर विशेष जोर दिया। अपने लेख इकनोमिक इंस्टीटूशन्स ऐज़ सोशल कंस्ट्रक्शंस में मार्क ग्रानोवेटर ने तर्क दिया है कि, संस्थान वास्तव में संगठित सामाजिक नेटवर्क हैं क्योंकि अधिकतर आर्थिक क्रियाएं इन्हीं नेटवर्क पर घटित होती हैं। अतः यह आवश्यक है कि समाज विज्ञानी अर्थव्यवस्था का अध्ययन करते समय मनुष्यों के आपसी संबंधों पर विचार अवश्य करें। वह तर्क देता है कि समकालीन आर्थिक समाजशास्त्र में बाजारों को उत्पादकों का ऐसा नेटवर्क माना जाता है जो एक दूसरे पर पूरी तरह नजर रखते हैं तथा कदम कदम पर दबाव बनाते रहते हैं। ऐसे नेटवर्क का समकालीन आर्थिक समाजशास्त्र में महत्वपूर्ण स्थान है।

कार्ल पोलानई का भी आर्थिक समाजशास्त्र में विशेष योगदान रहा है। उसका तर्क है कि स्वतंत्र बाजार का जन्म संस्थागत परिवर्तनों से संभव हुआ तथा सरकार ने इन्हें विशेष रूप से बढ़ावा दिया है। आर्थिक समाजशास्त्र के क्षेत्र में इसे सामान्यतः स्वीकार कर लिया गया है।

6.3.3 नए आर्थिक समाजशास्त्र का उदगम

कन्वर्ट, बी तथा हेलब्रोन, जेने अपने लेख व्हेयर डिड न्यू इकनोमिक सोशलॉजी कम फ्रॉम में नए आर्थिक समाजशास्त्र का विस्तृत वर्णन किया है। वे तर्क देते हैं कि नए समाजशास्त्र ने अपनी वैज्ञानिक प्रमाणिकता अपने अंदर दो नयी सशक्त धाराओं को एक साथ उतारते हुए स्थापित की है - नेटवर्क विश्लेषण तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर अवस्थित आधुनिक संस्था पर कता। इस से नया आर्थिक समाजशास्त्र, समाजशास्त्र का सबसे जीवंत अंग बन गया है।

आर्थिक समाजशास्त्र

ब्रिटानिका एनसाइक्लोपीडिया के अनुसार आर्थिक समाजशास्त्र उत्पादन, वितरण, विनिमय तथा वस्तुओं एवं सेवाओं के उपभोग के बीच संबंधों को समझने के लिए सामाजिक क्रियाओं का उपयोग करता है। आर्थिक समाजशास्त्र आर्थिक क्रियाओं व सामाजिक तथा संस्थागत परिवर्तनों के प्रति विशेष रूप से सतर्क है।

6.4 समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र की सामान्य समस्याएं

6.4.1 बेरोज़गारी

जब हम बेरोज़गारी के बारे में बात करते हैं तो प्रायः यही समझते हैं कि यह एक आर्थिक समस्या है। परंतु यदि हम बेरोज़गारी के असली कारणों को तलाशने का प्रयास करें तो इसका सही उत्तर समाजशास्त्र दे सकता है। समाज शास्त्रियों की दृष्टि में बेरोज़गारी एक सामाजिक समस्या है। उनका तर्क है कि बेरोज़गारी के पीछे वास्तव में सामाजिक कारण होते हैं। समाज का पिछड़ापन, बढ़ती जनसंख्या, शिक्षा प्रणाली की खामियां तथा लोगों में मौजूद जड़ता व आलस्य की प्रवृत्ति आदि बेरोजगारी के प्रमुख कारण हैं। कुछ समाजशास्त्री बीमारी, विकलांगता, अयोग्यता, अनुभव हीनता तथा व्यावसायिक निपुणता के अभाव आदि व्यक्तिगत कारणों को भी बेरोजगारी के लिए जिम्मेदार मानते हैं।

जबकि अर्थशास्त्रियों के लिए बेरोजगारी एक आर्थिक समस्या है। अर्थव्यवस्था का वैश्वीकरण, पूंजीवादी समाजों का औद्योगिक समाजों में बदल जाना आदि बेरोजगारी की समस्या के लिए विशेष रूप से जिम्मेदार हैं। अर्थशास्त्रियों का तर्क है कि बेरोजगारी मजदूरों की मांग पर निर्भर करती है। जब मजदूरों की संख्या की तुलना में रोजगार के अवसर कम पड़ जाते

हैं तो बेरोजगारी का जन्म होता है। बढ़ी हुई जनसंख्या भारत में बेरोजगारी का प्रमुख कारण है। क्योंकि यहां काम की तलाश में घूमने वाले लोगों की संख्या जिस तेजी से बढ़ी है उस अनुपात में रोजगार उत्पन्न नहीं किए जा सके हैं। परिणामतः बड़ी संख्या में यहां ऐसे लोग मौजूद हैं जिन्हें काम नहीं मिल पाता और वे निराशा व हताशा का जीवन जीने के लिए विवश हैं। इससे देश में मानव संसाधन तथा मानव हितों की रक्षा में गिरावट आ रही है।

6.4.2 बाल मजदूरी

भारत जैसे अनेक विकासशील देशों में बाल मजदूरी का चलन आम हो गया है। हजारों की संख्या में किशोर अवस्था में पहुंच रहे बच्चे काम पर लगा दिए जाते हैं। इससे उनसे उनका बचपन छिन जाता है। वे पढ़ लिख नहीं पाते। विषम परिस्थितियों में काम करने के कारण उनका स्वास्थ्य बिगड़ जाता है, उनके मौलिक अधिकारों का हनन होता है। बाल मजदूरी का कारण केवल यह नहीं है कि बच्चे स्कूल नहीं जाना चाहते और काम पर चले जाते हैं। सच तो यह है कि उनके अभिभावक तथा उनका पालन पोषण करने वाले लोग ही यह फैसला ले लेते हैं कि वे स्कूल न जा कर काम पर जाएं और बाल मजदूर बन कर रह जाए। बच्चों को उनके काम के बदले पर्याप्त पगार भी नहीं दी जाती। ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक परिवारों में बच्चे खेती के कामों में लगा दिए जाते हैं, कुछ छोटी मोटी दुकानों पर या उद्यम केंद्रों में काम पर लग जाते हैं। नगरों में लड़कियों को वयस्क होने से पहले ही घरेलू नौकरानियां बना दिया जाता है। वे बर्तन धोने, घर साफ करने, बच्चों की देखभाल करने या फिर खाना बनाने के कामों में लग जाती हैं। आर्थिक संसाधनों की कमी, गरीबी और पिछड़ापन आदि अनेक कारण बच्चों को बाल मजदूर बनने पर विवश कर रहे हैं।

6.4.3 असमानता

असमानता का प्रश्न अर्थशास्त्र के सामने भी मुंहबाये खड़ा है और समाजशास्त्र के सामने भी। अर्थशास्त्रियों के लिए यह आर्थिक असमानता तथा समाजशास्त्रियों के लिए सामाजिक असामनता है। अर्थशास्त्रियों का काम है आर्थिक असमानता से निपटना तथा समाज शास्त्रियों का काम है कि वे सामाजिक असमानता का पता लगाएं और उसके कारणों को तलाशते हुए उसका समाधान तलाशे। आर्थिक व सामाजिक असमानताओं पर निम्न अवतरणों में विचार किया जा रहा है-

6.4.3.1 आर्थिक असमानता

समाज में आर्थिक असमानता के अनेक कारण है। आर्थिक संसाधनों के वितरण में, आमदनी के साधनों में, वेतन आदि अनेक आय स्रोतों में असमानता आर्थिक असमानता कहलाती है। आर्थिक असमानता तीन प्रकार की होती है- असमान आय, असमान वेतन तथा असमान वित्तीय संसाधन। लोगों के बीच आय के वितरण की असमानता आय आधारित असमानता को जन्म देती है। आय के अंतर्गत कार्य अथवा उद्यम के बदले होने वाली आमदनी में पगार, वेतन, बोनस आदि सब आते हैं।

वेतन असमानता दूसरे प्रकार की आर्थिक असमानता है। वेतनमानों में विभिन्नता कार्य स्थलों की विभिन्नता के कारण होती है जो अंततः वेतन आधारित आर्थिक असमानता को जन्म देती है। तीसरे प्रकार की आर्थिक असमानता वित्तीय संसाधनों के असमान वितरण के कारण उत्पन्न होती है। किसी व्यक्ति को प्राप्त समस्त वित्तीय संसाधनों से होने वाली आय इस श्रेणी में आती है। इसमें चल व अचल संपत्ति, स्टॉक, पेंशन आदि सब शामिल है।

6.4.3.2 सामाजिक असमानता

जब सामाजिक संसाधनों का वितरण असमान होता है तब सामाजिक असमानता का जन्म होता है। जाति, वर्ग, लिंग आदि के आधार पर सामाजिक संसाधनों के वितरण से सामाजिक असमानता उत्पन्न होती है। सामाजिक स्तर के आधार पर मिलने वाले धन कमाने के अवसर व पुरस्कार पाने के अवसर सामाजिक असमानता पैदा करते हैं। अपनी चर्चित पुस्तक सोशियोलॉजी थीम्स एंड पर्सपेक्टिव्स में एम. हरलाम बोसने सामाजिक अथवा प्राकृतिक असमानता का वर्णन किया है। अंग्रेजों का काले लोगों के साथ रंगभेद का बर्ताव और उन पर आधिपत्य जमा कर उनके शोषण से अधिक आय पैदा करना सामाजिक असमानता का उदाहरण है।

बोध प्रश्न

1) आर्थिक समाजशास्त्र को समाजशास्त्र की उपशाखा क्यों कहा जाता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) अर्थशास्त्र तथा समाजशास्त्र की सामान्य समस्याएं क्या है उनकी व्याख्या कीजिए। समुचित उदाहरण से अपने उत्तर की पुष्टि कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

6.5 सारांश

इस इकाई में हमने समाजशास्त्र तथा अर्थशास्त्र के बीच संबंधों का अध्ययन किया और जाना कि किस प्रकार समाज आर्थिक मानकों से प्रभावित होता है तथा सामाजिक स्थितियां कैसे आर्थिक नीतियों व योजनाओं के निर्माण का आधार बनती हैं। समाज में व्याप्त घृणा व लड़ाई झगड़ों की जड़ें पारिवारिक संपत्ति के बंटवारे को लेकर माता पिता व उनकी सन्तानों के बीच की कलह में विद्यमान रहती हैं।

आर्थिक जगत की अधिकतर गतिविधियां सामाजिक आवश्यकताओं व स्तरों अदि पर होने वाले व्यय तथा सामाजिक स्तरों को ऊँचा उठाने के अन्यान्य प्रयास आदि से प्रभावित होती है। धनवान दूसरों की दृष्टि में अपने आप को उच्च दिखने के लिए कीमती चीज़ो की खरीदारी करते है तथा विलासिता का जीवन जीते है। किसी व्यक्ति का सामाजिक जीवन

जैसे उसका परिवार, उसकी शिक्षा, उसका पद, विवाह, रहन सहन का स्तर यह तय करता है कि वह परिवार पर कितना खर्च करें, विवाह आदि उत्सव के अवसरों पर कितना खर्च करें। इस प्रकार आर्थिक मानक व्यक्ति की जीवन शैली तथा आवश्यकताओं को प्रभावित करते हैं। समाज की आर्थिक आवश्यकताएं प्रायः सामाजिक संस्थानों द्वारा पूरी की जाती हैं। इससे स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र व समाजशास्त्र दोनों एक दूसरे से कुछ इस तरह जुड़े हैं कि यदि किसी एक का अध्ययन करना हो तो दूसरे को भी साथ लेकर चलना पड़ेगा।

6.6 सन्दर्भ

अहूजा, राम. 1992 सोशल प्रॉब्लम्स इन इंडिया, रावत पब्लिकेशंस।

अप्पादुरई, ए. 1986 द सोशल लाइफ ऑफ थिंग्स कमोडिटीज इन कल्चरल पर्सपेक्टिव,कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस भवन।

बोर्दियू, पिएर्रे .1984 डिस्टिंक्शन सोशल क्रिटिक ऑफ द जजमेंट ऑफ टेस्टहार्वर्डः यूनिवर्सिटी प्रेस हार्वर्ड।

गिलबर्ट, पास्कल. 1973 फंडामेंटल्स ऑफ सोशियोलॉजी, ओरियंट लोंगमैन प्राइवेट लिमिटेड।

हरलामबोस, एम. 2005 सोशियोलॉजी थीम्स एंड पर्सपेक्टिव्स, नई दिल्ली, ओयू पी।

इन्कलेस, अलेक्स.1979 व्हाट इस सोशियोलॉजी?ः इन इंट्रोडक्शन टू डिसीप्लिन एंड प्रोफेशन, प्रेन्टिस हॉल।

ओंकार नाथ, जी. 2012 इकोनॉमिक्स, प्राइमर फॉर इंडिया, ओरियंट ब्लैकस्वान।

स्मेल्सर, ए मार्टिनेली. इकोनामी एंड सोसाइटीज, ओवरव्यू इन इकोनामिक सोशियोलॉजी, लंदनः सेज।

स्वेडबर्ग, नील जे एंड रिचर्ड. 2005 द हैंडबुक ऑफ इकोनॉमिक्स सोशियोलॉजी प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क।